Indian Journal of Social Sciences and Literature Studies
Vol. 8, Issue 3, December 2022
ISSN 2349-5634 (Print) ISSN 2455-0973 (online)

समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में 'अतीत नहीं होती नदी'

सोमनाथ पंडितराव वांजरवाडे
सहायक प्राध्यापक,
विवेकानंद महाविद्यालय, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

'अतीत नहीं होती नदी' छोटी मोटी कविताओं नब्बे का दिशा प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित दामोदर खडसे का एक महत्वपूर्ण काव्य संग्रह है। शब्द को ब्रह्मा मानकर जीनेवाला यह संवेदनशील कवि आज के भूमंडलीकरण के दौर में बाजारवाद के गिरफ्त में जो समय है उस समय से उपस्थिति स्थितियां, दिन-ब-दिन ह्रास होते मूल्य, बदलते रिश्ते और जीवन के समीकरण को यथार्थ के धरातल पर हमारे सम्मुख प्रस्तुत करते हैं। यह कविता समकालीन यथार्थ का वह आइना है, जिसमें हम अपने समाज को साफ रूप में देख सकते हैं। धूमिल ने कहा था "कविता भाषा में मनुष्य होने की तमीज है।" वही एक और हिंदी के महत्वपूर्ण आज के सशक्त हस्ताक्षर कवि राजेश जोशी कहते हैं "कविता उल्लंघन की एक सतत प्रक्रिया है।" कविता मनुष्य होने की तमीज से लेकर सतत उल्लंघन की प्रक्रिया है। आज के दौर में सबसे ज्यादा संकट में कविता और मनुष्य है। इसलिए दामोदर खडसे चिंतित दिखाई देते हैं। यह छोटी बड़ी नब्बे कविताएं व्यष्टि और समष्टि की गहराई नापती हुई दिखाई देती है। व्यक्ति, व्यवस्था की कई परतें हमारे सम्मुख खोलकर रख देते हैं।

'अतीत नहीं होती नदी' की कविताएं अपने समय की आहट है। जिसमें गिरवी होते समय बंजर समय से चिंतित कवि महानगर की भागदौड़ आपाधापी, समय की गतिमानता में परिवर्तित होते रिश्ते उसके बदलाव भारी प्रदूषण और शोर पर्यावरण के विनाश एवं भूकंप जनित त्रासदी को, साथ ही श्रमिक जीवन की पीड़ाओं के कठोर जीवन को यथार्थ के साथ अभिव्यक्त करते हैं। शुरुआती रचना 'कविता' में वह अपने गिरवी हुए और टूटते समय को उसकी विसंगतियों दर्ज करते हैं-

"समय जब कहीं गिरवी हो जाता है
सांसे तब कितनी भारी हो जाती हैं
आसपास दिखता नहीं कुछ भी
केवल देह दौड़ती है।
कविता अंधेरी रातों को
चुभती विसंगत बातों को देगी एक संदेश...।"1 12

समकालीन समय और संबंधों की बिसात पर बिछी हुई इस दुनिया में बाजारवाद, भूमंडलीकरण, भौतिक लिप्सों के पीछे दौड़ते समाज में रिश्ते में आए हुए बदलाओं और बंजर होते समाज को 'पहचान' नामक कविता के जरिए पहचान देते है-

"इस बंजर समय के रिश्ते में
यदि ठीक-ठाक रहा सब तो
ऐसे में भी
आते जाते मुझे लगता है
पहचान ही लेंगे हम एक दूसरे को।"2 22

यथार्थ से जुड़ी और सामाजिक विसंगतियों, असंगति को दर्शाती एक और कविता है 'कब तक' जिसमें सामाजिक विषमता को और आज की सच्चाई को, रिश्तो में आए हुए बंजरपन को लेकर लिखते हैं-

"रिक्शा चलाते चलाते
उसके पैर थिर हो जाते हैं
सब दु:ख ही दु:ख है
सुख के लिए तरसती है दुनिया
खुशी किस चिड़िया का नाम है।"3 108

वहीं रिश्तो में आए बदलाव और उसके बंजर पंखों इसी कविता में व्यक्त करते हुए कहते हैं

"घर घर्राने लगा है,
बेटियां निकल जाती है दामादों के साथ
बेटों को निकाल ले जाती है बहूएँ
बुढ़िया रह जाती है
गिरती दीवारों की गवाह…
रोटियां बेलती तवे पर
लड़खड़ाती करछुल पता नहीं कब मौन हो जाए
वह फिर अनाथ हो जाएगा
रिक्शा पर बेचैन उसका पैर
चौराहे पर भरपूर ब्रेक लगाता है
और ट्रक की भरपूर रफ्तार से साफ बच जाता है
आखिर कब तक?"4 108

इसमें साइकिल रिक्शा चालक की करुण कथा का वर्णन किया गया है जो आरामदेह सीट सिर पर धूप तथा पानी से बचाव के लिए भी तरसता है। 'अमृत का जन्म' कविता में इसी बदलते रिश्तों की सच्ची तस्वीर हमें दिखाते हुए कहते हैं

"रिश्ते बदलते हैं रोज
सृष्टि की तरह
कोई नहीं रह पाता वैसा
जैसा जब कोई जिसे चाहे जिस समय…।"5 74

यही फलसफा है आज के वैज्ञानिक कहलाने वाली 21वी सदी का।

वहीं पर आज के दौर की सबसे चर्चित समस्याओं में से परिवार का विघटन और उपेक्षित जीवन जीने के लिए मजबूर वृद्धों की स्थिति और उनकी चिंताओं को भी पीड़ा के साथ व्यंजन किया है। दामोदर खडसे अपने समय के प्रति समाज के प्रति और परिवेश के प्रति एक अत्यंत सजग कवि है। उनकी कविताओं में व्यक्ति, प्रकृति उसकी विविधता विराटता और सौंदर्य के साथ ही कमजोर होते मानवीय रिश्ते, बदलती दुनिया के बेचैन करनेवाले सवाल और पर्यावरणीय चिंता का गहन अंर्तनाद भी है।

समकालीन दौर की दो महत्वपूर्ण चिंताएं पर्यावरण और स्त्री विमर्श की है। मनुष्य ने अपनी लालसा के मुताबिक प्रकृति का तनिक भी ख्याल न रखते हुए उसका दोहन किया है। जिसके परिणामस्वरूप प्राकृतिक आपदाओं के विपत्तियों के कारको और कारणों पर 'नदी के मन में' नदी के जरिए जायज सवाल उपस्थित करते हैं-

"जब बेमौसमी हो जाती है
कोसी जाती है बेतरह बरसात
फसलें विप्लव देखती हैं
और धरती की आंखें डबडबा आती हैं

प्रकृति पर लगती है तोहमत !

उस बारे में सबको सोचने के लिए अंतर्मन में झांकने के लिए प्रकृति की ओर से सवाल भी उपस्थित करते हुए कहते हैं

"कौन सोचता है भला -
पहाड़ों में बिछाई किसने सुरंगे
जंगलों को किसने किया निर्वसन
हवाओं में बोयी किसने बारूद
मनचाही रौंदी प्रकृति किसने और कौन भुगत रहा है।"6 140

प्रकृति के दोहन का परिणाम विनाशकारी बवंडर बाढ़ भूकंप और ज्वालामुखी है। वैज्ञानिक अनुसंधान उपभोक्ता संस्कृति में दिन-ब-दिन होने वाला अंधाधुंध दुरुपयोग और उसी के परिणाम स्वरूप मानव निर्मित पर्यावरण विनाश को 'रेतीली नदी' के जरिए व्यक्त करते है-

"पिछले भूकंप में भी
पहाड़ अडिग
नदी की बेचैनी देख रहा था
नदी के किनारे दरक गए थे
धारा विचलित थी।"7 146

भूकंप जैसी आपदा से पहाड़ के प्रतीक के रूप में प्रकृति के विकृत रूप तथा उदासी को व्यक्त करते हुए कहते हैं

"पहाड़ उस भूकंप की याद से ही कुछ उदास हो जाता है।"8 147

इसका परिणाम हर साल हम देख रहे हैं। अभी 2023 की ताजा दु:खदायी तुर्किस्तान और सीरिया की भूकंप की दुर्घटना उससे हुई तबाही मन को दुखी करने वाली है। वहीं पर उत्तराखंड के जोशीमठ हो या जम्मू की पहाड़ों की घटनाएं हो जो बहुत बड़ी दुर्घटना के मुहाने पर खड़े हैं। इसलिए इस विनाश के लिए जिम्मेदार मनुष्य थोड़ा रुक कर यह यह सोचे इसके कारक और कारण क्या हैं ? एक सवाल सबके सामने उपस्थित करता है कि "पर सोचता कौन है भला ?"

वही समाज बोध से जुड़ी एक और महत्वपूर्ण समस्या है स्त्री विमर्श की। जिसे दुनिया की आधी आबादी तथा समाज जीवन की महत्वपूर्ण इकाई कहा जाता है। 21वीं सदी में भी अपनी जगह और अधिकारों को तलाशती स्त्री के प्रति जागरूक नागरिक होने के नाते नदी के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत करते है। उसके यात्रा को नदी के माध्यम से प्रस्तुत करते हुए 'स्त्री' कविता में कहते हैं -

"नदी बहती है शाश्वत उबड़ खाबड़ और पथरीली सतह पर…
नदी भी भीतर से बेचैन पर कभी छलक ने नहीं देती आंसू बहती है शाश्वत।"9 33

नदी के याने स्त्रियों के आंतरिक और बाह्य दोनों पक्षों को अभिव्यक्ति दी है।

कई मोर्चे पर संघर्षरत स्त्री अपने आप को आधुनिक कहलाने वाले समाज में किस तरह जीवन गुजार रही है और किस तरह अपने आप को पाती है इसे सार्थक अभिव्यक्ति दी है स्त्री नामक कविता के जरिए-

"सुबह से शाम तक
सड़कों, बसों, टैक्सियों, ट्रेनों में
किचन, घर, दफ्तरों में
बच्चे - पति, सगे - संबंधी, मित्र - परिवार,
लोभी - लालची, मायावी रावण के बीच
लक्ष्मण रेखाओं के बाहर भीतर
बहती है स्त्री नदी की तरह !"10 36

अर्थात कविता स्त्री को उसके जीवन को उसके विभिन्न पहलुओं को यथार्थ के साथ अभिव्यक्त करते हैं।

भारी होते विपरीत समय के कारण बोझिल वर्तमान से डगमग कवि घातक समय में सहमकर कविता का दामन थाम लेता है यही इस कवि की ताकत है। जैसे उन्हीं के शब्दों में 'थोड़ी सी कविता' के जरिए कहे तो-

"कभी कभी, नहीं, अक्सर ही भारी हो जाता है...
कभी कभी,समय कभी समय
इतना क्यों विपरीत हो जाता है
कि वर्तमान बोझिल और भविष्य डगमगा उठता है...
ऐसे घातक समय में ..."11 113

ऐसे विपरीत ओझिल और घटक समय में कभी घबराते हुए कविता का दामन थाम लेता है इससे यह साफ पता चलता है कि कविता कितनी महत्वपूर्ण और सशक्त माध्यम है उन्हीं के 'गंध' कविता के हवाले से कहें-

"वैसे तो मैं,
दुनिया से इतना सहम गया हूं
कि, जब भी घबराता हूं, कविता लिखता हूं।"12 126

आधुनिक दौर में जहां शहरीकरण बढ़ रहा है शहरों की चकाचौंध लोगों को अपनी ओर आकर्षित करती है तो वह सहज है उसकी ओर चले जाते हैं कभी रोजगार की तलाश में तो कभी मजबूरी में सपनों की मायावी नगरी मुंबई जैसे महानगरों में दाखिल हो जाते हैं। वहां के समाज जीवन का चित्रण विशेष रूप से वहां की रात की जिंदगी को बयान करती हुई कहानियां हमारे सम्मुख 'इंद्रधनुष्य रौंदा हुआ' कविता के जरिए रखते है -

"मुंबई की यह चमचमाती नरीमन प्वाइंट की सड़क
आज सचमुच रानी का हार बन गई थी..."
बाजार में खड़ी थी रोशनी, लोग बोली लगा रहे थे
पता नहीं चल रहा था कि
यह ठहाकों का व्यापार था या व्यापार का ठहाका था...।"13 29

एक और कविता 'सूरज यहां भी वहां भी' आधुनिकता की अंधी दौड़ में गांव किस तरह चपेट में आ रहे हैं साथही महानगर की आपाधापी, हड़बड़ी, उसकी भागमभाग, वहां के दंगे फसाद कि चपेट में आनेवाले लोगों की साक्ष देती है-

महानगर की हड़बड़ी, भागमभाग
हर मोड़ पर कहीं बम तो कहीं बाढ़
कभी दंगे तो कहीं आग
शहर भी आए हैं
होनी अनहोनी की चपेट में गांव की तरह ....!"14 39

भौतिकतावाद की, अंधी चपेट में आए हुए आज के समाज में जिस तरह उपभोक्तावादी संस्कृति पनप रही है। मांडवी नदी पर पैराडाइज कहने वाले क्रूज का (उपभोग) आकर्षण लोगों में बढ़ रहा है,उस समाज का चित्रण अनायास ही सोचने के लिए मजबूर करता है कि एक तरफ इतनी समस्याएं हैं और दूसरी ओर कृत्रिम खुशी की तरफ आकर्षित,अग्रसर होते हुए लोगों की प्रवृत्ति को 'तुम्हारा वजूद' कविता के माध्यम से उद्घाटित करते हैं-

"मांडवी की अथाह नदी,
चांद की घनी चांदनी,
रंग बिरंगा जगमगाता क्रुज,
मदहोश करता संगीत,
जाम थामकर होश संभालते लोग,
पैरों की थिरकन,

और नजरों की फिसलन को रोक नहीं पाते…."
मांडवी की हथेली पर यह क्रूज,
मदहोश और संगीत से लबालब
वयस्क कदम भी
अनायास ही थिरक उठते हैं
"पैराडाइज" कहलाता है यह क्रूज…15"155
कृत्रिम स्वर्ग या जन्नत के प्रति आकर्षित लोगों की दास्तां या कहानी कहते हैं-
"आंखों के जल में एक क्रूज सजाया होगा
तुम्हारा वजूद मांडवी के आसपास आया होगा…।"16 157

प्रस्तुत संग्रह के माध्यम से दामोदर खडसे अपने समय समाज और परिवेश के प्रति सजग दिखाई देते हैं। आज की समय ज्ञानिक सदी में वैज्ञानिक सदी में जिसका अपना एक आवाज राज और इल्म से भरा हुआ संसार है दामोदर खडसे ने इस विभिन्न आयामों से देखकर अनुभव कर उसे इन छोटी बड़ी कविताओं के रूप में रेखांकित किया है। जीवन और जगत की तमाम विसंगतियों असंग तीनों और विषमताओं साथ ही तमाम तनाव और अतिथियों के साथ बीच जीवन के प्रति आस्था और उम्मीद की कविताएं है यह स्वस्ति का भाव उनकी कविताओं में की विशेषता रही है कवि के शब्दों में-

"अपनी धरती से उठती आवाज
जगाती उम्मीद बहुत है...
फिर लगता है बहुत सारे सहारे बाकी है अभी।
जीवन में आस्था बहुत, जीने में विश्वास बहुत।" 66

जीवन का यह राग और जीवन के प्रति आस्था और अडिग विश्वास ही इस काव्य को विशेष बनाती है।

संदर्भ :

1. दामोदर खडसे, अतीत नहीं होती नदी, दिशा प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 12
2. वही पृ.22
3. वही पृ. 108
4. वही पृ.108
5. वही पृ.74
6. दामोदर खडसे, अतीत नहीं होती नदी, दिशा प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ..140
7. वही पृ.146
8. वही पृ.147
9. वही पृ.33
10. वही पृ.36
11. वही पृ.113
12. दामोदर खडसे, अतीत नहीं होती नदी, दिशा प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.126
13. वही पृ.29
14. वही पृ.39
15. वही पृ.155
16. दामोदर खडसे, अतीत नहीं होती नदी, दिशा प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.157